



मादा पशु एवं प्रसूति रोग विभाग
लाला लाजपतराय पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, हिसार
(हरियाणा) 125004



पशुओं में फिराक पड़ना

एक सामान्य चक्रीय पशु जिसमें स्पष्ट रूप से सामान्य जननांग हों और जिसको तीन या तीन से अधिक बार सामान्य मदकाल में उत्तम बैल के साथ या उत्तम वीर्य के साथ कृत्रिम गर्भाधान करने के उपरांत गर्भधारण करने में असक्षम हो, तो उस पशु को रिपीटर कहा जाता है। इस स्थिति में कोई असामान्य योनि स्राव नहीं होता और जननांग में कोई खास असामान्यता नहीं होती। पशुओं के बार-बार फिरने की समस्या के बहुत कारण होते हैं। इसके तीन मुख्य कारक होते हैं:

नर पक्ष में कमी:

1. बैल में बाँझपन
2. नर में शुक्राणुओं की कमी और कम गतिशीलता
3. प्रजनन सम्बंधित रोग: प्रजनन सम्बंधित रोगों का नर तथा मादा में आपस में संक्रमण भी पशु के गर्भ न ठहरने का कारण बनता है। इसलिए उत्तम वीर्य से कृत्रिम गर्भाधान करवायें।

मादा पक्ष में कमी:

1. अंडाणु का देरी से निकलना: इसके इलाज के लिए पशु चिकित्सक से हार्मोन्स द्वारा ईलाज करवाएं।
2. अंडाशय से अंडाणु का न निकलना: मदकाल के 7 से 10 दिन बाद, पीतपिंड का न बनना। इसके लिए पशु चिकित्सक से ईलाज करवाएं।
- 3 निषेचन में असफलता: वृद्ध अंडाणु या दोषपूर्ण अंडाणु के कारण निषेचन में असफलता हो सकती है। इसके उपचार के लिए किसी उत्तम नस्ल के बैल के वीर्य से 12 घंटे के अंतराल पर दो बार कृत्रिम गर्भाधान।
4. पीतपिण्डय असक्षमता: इसके उपचार के लिए कृत्रिम गर्भाधान के उपरांत हार्मोन्स द्वारा पशु चिकित्सक से ईलाज करवाएं।
5. गर्भाशय की आन्तरिक परत की सूजन: इसमें गर्भाशय की आन्तरिक परत में संक्रमण हो जाता है। इसके लिए पशु चिकित्सक से ईलाज करवाएं।
6. अंडवाहिनी में पानी का भरना: पशु में एक तरफ की अंडवाहिनी में पानी भरने से मादा पशु में बार-बार फिरने की समस्या आती है और अगर दोनों अंडवाहिनियों में पानी भर जाये तो पशु बाँझ बन जाता है।
7. अंडाशय का बरसा से जुड़ना: अगर यह स्थिति जननांग के एक तरफ होती है तो पशु बार-बार फिरता है और अगर दोनों तरफ हो जाये तो मादा पशु पूर्ण रूप से बाँझ बन जाता है।
8. अंडवाहिनी में रुकावट: अगर यह स्थिति जननांग के एक तरफ तो मादा में बार-बार फिरने की समस्या आती है, और अगर यह स्थिति दोनों तरफ की हो तो मादा पशु पूर्ण रूप से बाँझ बन जाता है।
9. गर्भकाल के प्रारंभिक दौर में भ्रूण मृत्यु: यदि भ्रूण की मृत्यु कृत्रिम गर्भाधान के 10-12 दिन पश्चात होती है, तो मादा पशु का मदचक्र सामान्य रहता है। लेकिन अगर भ्रूण की मृत्यु इस समय के बाद हो तो मदचक्र का काल बढ़ जाता है।

प्रबंधन में कमी:

1. आवश्यक पोषक तत्वों की कमी: पोषक तत्वों की कमी से बचाव के लिए मादा पशु को संतुलित आहार तथा रोजाना 50 से 100 ग्राम खनिज लवण खिलाएं।
2. पशुओं में सही समय पर मद (गर्मी) का पता ना लगना : पशु की गर्मी पहचानने के लिए पशुपालक को पशुओं में गर्मी के लक्षणों की पूर्ण जानकारी होनी चाहिए।
3. सही समय पर मिलान या कृत्रिम गर्भाधान न करवाना : गर्मी के लक्षणों पहचानने के 12 घंटे बाद ही कृत्रिम गर्भाधान करवाना चाहिए और 12 घंटे बाद दोबारा कृत्रिम गर्भाधान करवाना चाहिए।
4. वीर्य के विस्तार, हिमीकरण और भण्डारण में कमी।
5. कृत्रिम गर्भाधान में प्रयोग होने वाले स्ट्रॉ (बीज) की थॉइंग करते वक्त पानी के तापमान का सही ना होना। अतः स्ट्रॉ (बीज) की थॉइंग 35 °C तापमान पर 30 सेकिंड के लिए करनी चाहिए
6. अप्रशिक्षित व्यक्ति से कृत्रिम गर्भाधान करवाना: पशु चिकित्सक या प्रशिक्षित इन्सेमिनटर से ही कृत्रिम गर्भाधान करवाना चाहिए।